ऋग्वेद का सामाजिक, सांस्कृतिक
और
ऐतिहासिक सार

महामहोपाध्याय
प० विश्वेश्वरनाथ रेउ

राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम)
उदयपुर

प्रकाशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)
उदयपुर

मुद्रक
जगदीशप्रसाद, एम ए बी-काम
एज्युकेशनल प्रेस आगरा

मूल्य ६.०० रुपये

प्रथम संस्करण मार्च १९६४

प्रकाशकीय

ऋग्वेद ससार का प्राचीनतम ग्रथ माना जाता है और आर्यों के धम सस्कृति सम्यता और इतिहास का यही एक मात्र मूल स्रोत है।

महामहोपाध्याय प० विश्वेश्वरनाथ रेउ न प्रस्तुत ग्रथ म ऋग्वद के मत्रो के आधार पर तत्कालीन सामाजिक सास्कृतिक और एतिहासिक तथ्यों का पुनरावलोकन प्रस्तुत किया है। राजस्थान साहित्य अकादमी न इस ग्रथ की उपादेयता के महत्व को समझ कर इसक प्रकाशन का निणय लिया है। शोध कर्ताओ तथा ऋग्वद का सार जानन वाले व्यक्तियो को इसस बड़ी सहायता मिलेगी।

प० विश्वेश्वरनाथ रेउ वदिक-साहित्य के जान-मान विद्वान् है। उन्होंने डा० अविनाशचन्द्रदास कृत Rigvedic Culture (ऋग्वेद कालीन सस्कृति) का भी हिन्दी अनुवाद तयार किया है।

साहित्य अकादमी आभारी है कि रेउ जी न सुधी पाठको के लिये यह उपयोगी ग्रथ तयार किया।

विश्वास है कि ऋग्वेद का सामाजिक सांस्कृतिक एव ऐतिहासिक सार' पाठकों का आदर प्राप्त करेगी।

शातिलाल भारद्वाज 'राकेश'

वास्ते निदेशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (सगम)

उदयपुर (राजस्थान)

प्राक्कथन

प्रस्तुत पुस्तक में सायण के मतानुसार ऋग्वेद के कयस उन मन्त्रों के आशय दिये गए हैं जिनमें उस समय की सामाजिक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बातों की झलक मिलती है।

इसमें ऋग्वेद के मण्डलों सूक्तों और ऋचाओं का वही क्रम रक्खा गया है जो उक्त संहिता में मिलता है। परन्तु बीच में आयी स्तुतियों और उपासनाओं आदि से सम्बन्ध रखने वाले मन्त्रों को छोड़ दिया गया है।

इस ग्रन्थ में मत मतान्तरों के झमेले को छोड़कर सायण भाष्यानुसार केवल ऋग्वेद में मिलने वाले, उपयुक्त विषयों से सबद्ध, तथ्यों को ही उपस्थित किया गया है जिससे सुविज्ञ पाठक स्वयं ही अपना मत निश्चित कर सकें।

यत तो ऋग्वेद पर छोटे-मोटे अनेक भाष्य लिखे गए हैं परन्तु सायण का भाष्य ही विशेष प्रसिद्ध प्रचलित और उपयोगी माना जाता है। सायण ने ऋग्वेद भाष्य के अतिरिक्त अन्य संहिताओं और ब्राह्मणों पर भी भाष्य लिखे थे। इनका लिखा ऋग्वेद संहिता पर का भाष्य यज्ञपरक (आधिदैविक) है।

सायण विजयनगर के राजाओं के मन्त्री थे। इनके पिता का नाम मायण और बड़े भाई का नाम माधव था। सायण ने यह भाष्य अपने बड़े भाई की प्रेरणा से लिखा था इसी से इसे 'माधवीय भाष्य' भी कहते हैं। सायण का जन्म विक्रम संवत् १३७२ में, मृत्यु वि० सं० १४४४ में तथा भाष्यों का रचना काल वि० सं० १४०७ से १४०६ के बीच माना जाता है।

आशा है इस पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ने से जनसाधारण को ऋग्वेद के समय की संस्कृति, सभ्यता, आचार विचार, रहन सहन इतिहास उपाख्यान तथा धारणाओं आदि को मूलरूप में जानने में अवश्य ही कुछ सहायता मिलेगी और इस पुस्तक का इस रूप में पाठकों के सामने उपस्थित करने में यही हमारा मुख्य ध्येय है।

—विश्वेश्वरनाथ रेउ

समर्पण



राजस्थान के प्रसिद्ध चिकित्सक
राज्यरत्न डा० निरञ्जननाथ जी गुट्टू
की
पवित्र स्मृति मे सादर और सप्रेम

—लेखक

ऋग्वेद में मिलने वाली कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक बातें

प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त के पहले मन्त्र में अग्नि की स्तुति की गई है और उसे पुरोहित कहा है।

(यहाँ पर अग्नि से उसके अधिष्ठाता तेजोमय देव का तात्पर्य है और उसे पुरोहित इसलिये कहा है कि उसके बिना यज्ञ का सम्पादन नहीं हो सकता। अग्नि का एक नाम अङ्गिरा भी दिया है। कुछ लोगों का मत है कि अङ्गिरा के वंश के ऋषियों ने ही यहाँ पर अग्निपूजा का प्रचार किया था। इसी से अग्नि को अङ्गिरा कहने लगे।)

२ रे सूक्त के १ ले मन्त्र में वायु की स्तुति है और ४ थे मन्त्र में उसके साथ ही इन्द्र का भी सोम-पान के लिए आह्वान किया गया है। ७ वें मन्त्र में मित्र और वरुण का उल्लेख है।

(ईरानी लोग भी मित्र और वरुण के नाम से इनको पूजते हैं)

३ रे (अश्वि) सूक्त के १ ले मन्त्र में अश्विनीकुमारों का वर्णन है।

(इनकी उत्पत्ति के विषय में ऋग्वेद के दसवें मण्डल के १७ वें सूक्त में लिखा है कि सूर्य द्वारा त्वष्टा की कन्या सरण्यू के गर्भ से ये दोनों उत्पन्न हुए थे।) ७ वें मन्त्र में विश्वे देवों का उल्लेख है और १० वें में सरस्वती शब्द उक्त नाम की नदी और देवी के लिए आया है। ४ थे सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र-द्वेषियों के इस देश और अन्य देशों से दूर हो जाने की कामना की गई है।

(यद्यपि पारसी लोग वरे—थघ्न के नाम से हमारे वृत्रघ्न इन्द्र की पूजा करते हैं तथापि अवस्ता के दसवें फरगद में इन्द्र को पाप-बुद्धि कहा है और उसके पूजकों को निकाल देने को कहा गया है। इससे आर्यों के इन दलों में मत भेद हो जाना पाया जाता है।)

८ वें मन्त्र में इन्द्र का सोम-पान कर वृत्रासुर को मारना बतलाया है। (पुराणों के अनुसार इन्द्र ने दधीचि की हड्डी से बनाये वज्र से वृत्र का वध किया था। कुछ विद्वान् वृत्र से मेघ का तात्पर्य लेते हैं। अर्थात् इन्द्र ने मेघ को क्षत विक्षत कर वृष्टि करवाई थी। इसी प्रकार वे ऋगवेद में प्रयुक्त अहि शब्द का अर्थ भी मेघ ही करते हैं।)

५ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जो 'स्तोम' और 'उक्थ' शब्द आये हैं सायण ने इनका अर्थ क्रमशः सामवेद के मन्त्र और ऋगवेद के मन्त्र किया है।

६ ठे सूक्त के ५ वें मन्त्र में पणियों द्वारा चुराकर छिपाई गई गायों का इन्द्र द्वारा मरुद्गण (वायुदेवों) की सहायता से उद्धार करना लिखा है।

(इन्द्र ने इनका सरमा नाम की कुतिया की सहायता से पता लगाया था।)

७ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में जो 'पञ्चक्षिति' शब्द आया है उसका अर्थ सायण ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और निषाद किया है।

(इसी प्रकार द्वितीय मण्डल के दूसरे सूक्त की १० वीं ऋचा में आये 'पञ्च कृष्टि' और तृतीय मण्डल के ५६ वें सूक्त की ८ वीं ऋचा में आये 'पञ्चजना' शब्द का भी यही अर्थ किया है।)

११ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में वलासुर का गायें चुराना और इन्द्र का उसकी गुफा का पता लगाना लिखा है। इसके १३ वें सूक्त को आप्री (प्रीति कर) सूक्त भी कहते हैं।

इस सूक्त की १२ ऋचाओं में भिन्न भिन्न १२ नामों से अग्नि की स्तुति की गई है। वे नाम ये हैं —१ सुसमिद्ध २ तनूनपात् ३ नराशंस ४ ईडित (इलित) ५ बर्हि ६ देवीद्वार ७ नक्त-उषा ८ देव-द्वय ६ इडा (ला) (सरस्वती मही) १० त्वष्टा ११ वनस्पति और १२ स्वाहा।

१४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र वायु वृहस्पति मित्र अग्नि पूषा भग, आदित्य और मरुद्गणों का यज्ञ भाग देने का आदेश है। (वृहस्पति का एक नाम ब्रह्मणस्पति भी है। अनुप्रतेजवान् सूर्य को पूषा कहते हैं। अदिति (देव-माता) की सन्तान आदित्य थे। कहीं इनकी संख्या ६ कहीं ७ कहीं ८ और कहीं १२ मानी गई है।) १८ वें सूक्त की १ ली ऋचा में उशिज्-पुत्र कक्षीवान् का उल्लेख है।

(पुराणों के अनुसार निःसन्तान कलिङ्ग राज ने पुत्र प्राप्ति की कामना से अपनी रानी को दीर्घतमा ऋषि के पास जाने का आदेश दिया था। परन्तु

उसन स्वय न जाकर अपनी दासी उग्निज् को अपन बदल भेज दिया । उसी से कक्षीवान् का जन्म हुआ । कक्षीवान् ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ११६ स १२५ तक के सूक्तो के ऋषि हैं ।)

२० वें सूक्त के देवता ऋभुगण हैं ।

(ऋभु सुधन्वा के पुत्र और अङ्गिरा के पौत्र थ । इन्होने अपने मानसिक बल से इन्द्र के घोडे को पदा किया था । सूक्त ११० की ३ री और ४ थी ऋचाओं स ज्ञात होता है कि इस सूक्त क कर्ता ऋभुगण कुत्स के जाति भ्राता थे और इन्होने अपन कर्मों द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया था ।)

२ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र म ऋभुओ का अपने माता पिता को फिर से जवान बनाना और ६ ठे मन्त्र म ऋभुओ का त्वष्टा के नये चमस के ४ टुकड करना लिखा है ।

त्वष्टा (विश्वकर्मा) ऋभुगण का शिष्य और अश्विनी कुमारो का नाना था । त्वष्टा की कन्या सरण्यू ने घोडी का रूप धर इन (कुमारो) को जन्म दिया था ।)

२१ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र म रक्ष या राक्षसो का उल्लेख है और इन्द्र और अग्नि स उनको दुष्टता-शून्य और नि सन्तान करने की प्रार्थना है ।

२२ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र मे सूर्य का आह्वान है । १४ वें मन्त्र म गन्धर्वों का निवास अन्तरिक्ष में कहा है । १६ व से २३ वें तक के मन्त्रों में विष्णु का (वामन रूप से) तीन परों स सारे जगत् को व्याप्त करना प्रकट किया है ।

(इसके बाद के २४ से ३० वें सूक्त तक के वक्ता शुन शेप है ।)

(ऐतरेय ब्राह्मण म लिखा है कि राजा हरिश्चन्द्र ने जब अपने पुत्र रोहित के स्थान पर शुन शेप को वरुण क लिय बलि देने का प्रबन्ध किया तब उसन विश्वामित्र की समति स उपयुक्त ७ सूक्तों द्वारा देवताओं की स्तुति कर छुटकारा पाया था ।)

२४ वें सूक्त क १० वें मन्त्र म जो ऋक्षा शब्द आया है सायण न उसका अर्थ सप्तर्षि-नक्षत्र (Great bear) किया है । इस सूक्त का १४ वां मन्त्र यह ह —

अव ते हेला वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भि ।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथ कृतानि ॥१४॥

अर्थ—हे वरुण ! नमस्कार द्वारा और यज्ञों में हव्य प्रदान करके भी हम तुम्हारे क्रोध को दूर करते हैं। हे असुर ! प्रचेत ! राजन् ! हमारे लिये यज्ञ में निवास करके हमारे लिये पापों को शिथिल करो।

(इसमें प्रयुक्त असुर शब्द से प्रकट होता है कि पहले आर्य लोग देवताओं के लिए भी असुर शब्द का प्रयोग करते थे।)

इसी प्रकार ऋग्वेद के चतुर्थ मण्डल के ५३ वें सूक्त की १ ली ऋचा में भी—

'तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः ।

अर्थ—हम असुर (बलवान्) और प्रेरक सविता देवता के उस वरणीय धन की प्रार्थना करते हैं।

इसमें भी असुर शब्द सविता देवता के विशेषण के रूप में आया है। परन्तु इसी वेद में इस (असुर) शब्द का प्रयोग शत्रु और दुष्ट के अर्थ में भी मिलता है।

(किंवदन्ती है कि आर्यों का एक दल जो रुष्ट होकर ईरान या फारस की तरफ चला गया था बराबर असुर (अहुर) पूजक बना रहा और देवों से द्वेष करने लगा। परन्तु दूसरा दल जो भारत में रहा असुर-द्वेष्टा और देव पूजक बन गया। इसी प्रथम मण्डल के ३२ वें सूक्त की १२ वीं ऋचा में देव शब्द वृत्र के लिये प्रयुक्त हुआ है जो असुर माना जाता है।)

२५ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में पक्षियों के आकाश मार्ग और नौकाओं के समुद्र मार्ग का उल्लेख है तथा ८ वें मन्त्र से ज्ञात होता है कि आर्य लोग ऋग्वेद काल में भी सौर और चान्द्र वर्षों का अन्तर और उसको दूर करने के लिये अधिक मास का उपयोग जानते थे। १३ वें मन्त्र में सुवर्ण (जरी) के वस्त्रों या कवच का उल्लेख है।

२८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र से प्रकट होता है कि सोम को ओखली में कूटकर उसका रस निकाला जाता था और ६ ठे मन्त्र में ओखली का काष्ठ की होना लिखा है।

३० वें सूक्त की २० वीं ऋचा में उषा का उल्लेख है।

(ग्रीक लोग इस हो इआस के नाम से पुकारते हैं।)

३१ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अग्नि का मनु को स्वर्गलोक की कथा सुनाने का उल्लेख है। ११ वें में पुरुरवा के पुत्र नहुष का नाम आया है और १५ वें

मन्त्र मे वर्मवस्यूत से सिलाई किये हुए कवच का और जीवयाज यजते से पशु बलि वाले यज्ञ का उल्लेख है।

३२ वें सूक्त की २ री ऋचा में विश्वकर्मा द्वारा इन्द्र के वज्र का निर्माण करना लिखा है और इसके आगे इन्द्र के और वृत्रासुर के युद्ध का वर्णन है और १२ वी ऋचा मे देव शब्द वृत्रासुर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

३४ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र मे (और ४५ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में तथा तृतीय मण्डल के ६ ठे सूक्त के ९ वें मन्त्र में) ३३ देवताओं का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त में सूर्य के कार्यों का उल्लेख और उसकी स्तुति है तथा यम के घर को जाने वाले मार्ग का उल्लेख है।

३६ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में होत्राभि (होताओं द्वारा) लिखा है।

(ये सात माने जाते है—१ यजमान (यज्ञ करने वाला) २ होता (मन्त्र पाठी) ३ उद्गाता (मन्त्र गायक) ४ पोता (हव्य तयार करने वाला) ५ नेष्टा (अग्नि में हव्य डालने वाला) ६ ब्रह्मा (सब पदार्थों का निश्चायक) ७ रक्षक (द्वार रक्षक।)

४१ वें सूक्त के ९ वें मन्त्र में यद्यपि स्पष्ट तौर से जूए का उल्लेख नही है। परन्तु भाष्यकार इससे इसी का तात्पर्य लेते है।

४४ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में प्रस्कण्व की आयु-वृद्धि की प्रार्थना है।

४७ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में (पिजवन-पुत्र) सुदास का उल्लेख है।

ऋग्वेद के ७ वें मण्डल के १८ वें सूक्त के २५ वें मन्त्र में सुदास के पिता का नाम पिजवन या दिवोदास लिखा है। यही सुदास ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १३३ वें सूक्त का कर्ता था।)

५० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में सूर्य के ७ घोडों का उल्लेख है। ११ से १३ तक के मन्त्रों में सूर्य से रोग निवृत्ति की प्रार्थना की गई है।

(इन मन्त्रों का जप करने से ही प्रस्कण्व ऋषि का चर्म रोग दूर हुआ था।)

५१ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिरा अत्रि और विमद ऋषियों की सहायता करना कहा है। ११६ सूक्त के पहले मन्त्र में लिखा है कि अश्विनी-कुमारों ने विमद की स्त्री को रथ पर बिठा कर उसके पास पहुँचा दिया था।

इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र में इन्द्र से ययाति राजा के यज्ञ में सोम-पान करने की प्रार्थना की गई है। १३ वें में इन्द्र का राजा कक्षीवान् को वृचया नाम की युवति स्त्री प्रदान करने का और इन्द्र का वृषणश्व के यहाँ मेना नाम से उसकी पुत्री होने का उल्लेख है।

५२ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र द्वारा वृत्रवध का उल्लेख है। इसी के ५ वें मन्त्र में त्रित द्वारा परिधि के भेद और इन्द्र द्वारा बल नामक असुर के भेद का उल्लेख है।

(सायण ने तैत्तिरीय संहिता के आधार पर लिखा है कि अग्नि का पुत्र त्रित जल पीने का जाने पर कुएँ में गिर गया था और असुरों ने उस पर ढक्कन लगा दिया था। परन्तु त्रित उसे भेद कर बाहर आ गया।)

५३ वें सूक्त के ७ से १० तक के मन्त्रों में इन्द्र का नमी की सहायता से नमुचि का मारना, अतिथिग्व राजा के लिये करञ्ज और पर्णय नामक असुरों का वध करना, तथा राजा ऋजिश्वा द्वारा घेरे हुए वंगृद नामक असुर के १०० नगरों का भेदना और सुश्रवा पर चढ़ आने वाले २० नरेशों और उनके ६००९९ सैनिकों को हराना, राजा तूर्वयान का रक्षा करना, तथा कुत्स, अतिथिग्व और आयु राजा का सुश्रवा के अधीन करना लिखा है। (सायण ने तूर्वयान का दिवोदास का ही नाम माना है और पुराणों में आयु का पुरूरवा का पुत्र लिखा है।)

५४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र के तृतीय पाद [बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः] में असुर शब्द इन्द्र का विशेषण है और इसका अर्थ बलवान् मिलता है।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल में यह शब्द ७ बार आया है। यथा—

(२४ वें सूक्त की १४ वीं ऋचा में यह शब्द वरुण के लिये प्रयुक्त हुआ है। ३५ वें सूक्त की ७ वीं ऋचा में सूर्य किरणों के लिये आया है। इसी सूक्त की १० वीं ऋचा में सविता के वास्ते है। ५४ वें सूक्त की ३ री ऋचा में इन्द्र के लिये है। ६४ वें सूक्त की २ री ऋचा में मरुतों के हेतु है। १०८ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में ऋत्विजों के लिए है। तथा ११० वें सूक्त की ३ री ऋचा में त्वष्टा के लिए दिया है।)

५४ वें सूक्त की ६ ठी ऋचा में वृत्रवध के समय मरुद्गण का इन्द्र का प्रसन्न करना लिखा है।

५६ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में अयस् शब्द है। इससे उस समय लोहे के कवच के व्यवहार का होना प्रकट होता है।

५६ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र से वृत्र और शम्बर के वध म अग्नि का भी इन्द्र को सहायता देना प्रकट होता है। ७ वें मन्त्र मे शववनि पुत्र पुरुणीय राजा का उल्लख है।

६१ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र मे इन्द्र द्वारा सुवीति ऋषि के लिए निवास स्थान बनाने का उल्लख है। इसी सूक्त के १२ वें मन्त्र मे उसराय गोन पव विरदा तिरश्च' का अथ सायण ने इस प्रकार किया है —पशु की तरह वृत्र क शरार की हड्डियाँ टढ़े वज्र स काटा (यहाँ पर कुछ लाग 'गो' से गाय का अर्थ लेते हैं।)

१४ वें मन्त्र मे पवतों का इन्द्र के डर से निश्चल होना लिखा है। १५ वें मन्त्र म इन्द्र का सुवश्व के पुत्र सूय के साथ के युद्ध के समय एतश की रक्षा करना कहा है।

६२ वें सूक्त के २ रे और ३ रे मन्त्र स इन्द्र और अङ्गिरा लोगों का सरमा नाम की कुतिया की सहायता से पणियो द्वारा चुराई गाया के पता लगाने का उल्लख है।

६३ वें सूक्त क ४ र मन्त्र म इन्द्र का तरुण कुत्स की सहायता कर शुष्ण नामक असुर को मारना कहा है।

६६ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र मे अग्नि को कन्याओ का जार कहा है।

७१ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र म सप्त यह्वी' सात नदियो का उल्लख है।

(परन्तु इनके नाम कहीं पर भी नहीं दिय हैं। हाँ १० वें मण्डल के ७८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र मे (१) गङ्गा (२) यमुना (३) सरस्वती (४) शतद्रु (सतलज) (५) परुष्णी (रावी), (६) असिक्नी (चिनाव) (७) मरुद्वृधा (संभवत चिनाव की पश्चिमी मरुवर्दवन नाम की सहायक नदी) (८) वितस्ता (झलम) (९) सुषोमा (सोहान) और (१०) आर्जीकीया (व्यास) इस प्रकार १० नदियों की स्तुति की गई है।

यास्क परुष्णी स इरावती का सुषोमा स सिन्ध का और आर्जीकीया से विपाशा का अर्थ करते हैं।

७२ वें सूक्त क ४ थे मन्त्र मे रुद्र शब्द अग्नि के लिय प्रयुक्त हुआ है।

(सायण ने इस पर अपने भाष्य म तैत्तिरीय संहिता से यह कथा उद्धत की है—देवो और असुरा के युद्ध के समय अग्नि देवो की सम्पत्ति लकर भाग

गय । इसके बाद जब देवा न उस सर्पात का अग्नि म जबरदस्ती छीन ! तब अग्नि रोन लगे । इसी स अग्नि का एक नाम रुद्र हो गया ।)

इसी सूक्त के ६ ठ मन्त्र म २१ यज्ञा का उल्लख है ।

(सायण न उनके नाम इस प्रकार दिय हैं —विद्वन्य सम्बन्धी ७ ८ यज्ञ अग्न्याधेय इष्टि—पौर्ण मास आदि ७ हविर्यज्ञ अग्निष्टोम ७ अग्निष्टोम आदि ७ साम यज्ञ ।)

७६ वें सूक्त के पहल ३ मन्त्रा म विद्युद् रूप अग्नि का वर्णन है ।

८० वें सूक्त के २ रे मन्त्र म श्यन द्वारा साम का लाना लिखा है ।

(इसका उल्लख र ४थ और ८वें मण्डला म भी है । एतरेय ब्राह्मण की एक कथा म गायत्री का श्यन रूप धारण करना प्रकट होता है ।)

१६वें मन्त्र म अथवा मनु और अथर्वा के पुत्र दध्यङ के यज्ञो का उल्लख है ।

८४ वें सूक्त के १३ वें मन्त्र स प्रकट होता है कि इन्द्र न दधीचि ऋषि की हड्डिया स वृत्र आदि ६०×६=८१० असुरा को मारा था । इसी सूक्त क १५ वें मन्त्र म लिखा है कि इस चलन रहन वाल चन्द्र म अन्तर्हित जो सूर्य तेज ह वह सूर्य का ही एक किरण ह ।

(इसा स प्रकट होता ह कि उस काल म भी आर्यों को यह बात ज्ञात थी ।)

८५ वें सूक्त के १० वें मन्त्र म मरतो द्वारा कुए को ऊँचा उठान का उल्लख है ।

(इसी प्रकार ११६ वें सूक्त के ६वें मन्त्र म नासत्यद्वय (अश्विनी कुमारो) का गौतम ऋषि के पास मरुभूमि म कुआँ उठा लाने और गौतम की प्यास बुझाने के लिए उस उलटकर उसका पानी बहाने का उल्लख है ।)

८६ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र म मनुष्यो की १०० वर्ष की आयु होना लिखा है ।

(सायणाचार्य न इसस पहल के मन्त्र म कही आयु पर टीका करत हुए मनुष्यो की आयु ११६ या १२० वर्ष मानी ह ।)

इसी सूक्त के १० वें मन्त्र म जो 'पञ्चजना' शब्द है सायण न उसके दो

वध किये हैं —एक गन्धर्व पितर देव असुर और राक्षस। दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय वश्य शूद्र और निषाद।

(७ वें सूक्त में ६ वें मन्त्र के पञ्चक्षिति और १०० वें सूक्त के १२ वें मन्त्र के 'पाञ्चजन्य शब्द का भी यही तात्पय माना है।)

६३ वें सूक्त क ४ थ मन्त्र म वृसय का उल्लेख है।

(कुछ लोग इस ही इलियड का ब्रिसस (*Brises*) मानते है।)

१०१ वें सूक्त की १ ली ऋचा म इन्द्र का ऋजिश्वा राजा के साथ मिल कर कृष्ण नामक असुर की गर्भवती स्त्रियों का मारना लिखा है २ री ऋचा म इन्द्र की *भुजा-हीन वृत्र या व्यस शम्बर, पिप्रु और शुष्ण का मारने का* उल्लख है और ३ री ऋचा म इन्द्र का पणियो द्वारा चुराई गई अङ्गिरा, आदि की गायो का पता लगाना और दस्युओ का वध करना प्रकट किया है।

१०३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र म इन्द्र का वृत्र (व्यस) अहि और रौहिण नामक असुरो को मारना कहा है।

१०४ वें सूक्त क ३ रे मन्त्र म कुयव नामक असुर उसकी दो स्त्रियो और शिफा नाम की नदी का उल्लख है।

१०५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में वृक का उल्लख है।

(सायणाचाय न इसकी कथा इस प्रकार लिखी है —त्रित ऋषि के कुएँ म गिरने क पूर्व उन्हे खाने के लिए एक भेडिया नदी पार करने गया। परन्तु वह सूय की किरणो को देखकर अपने भोजन के समय का न होना समझ वापस लौट गया।)

१०८ वें सूक्त का ६ वां और १ वा मन्त्र करीब-करीब एक ही है। केवल पूर्वार्ध मे दो शब्दो म भिन्नता है।

११० वें सूक्त के २ रे मन्त्र म मन्त्र-कर्ता अङ्गिरा का पुत्र कुत्स ऋभुगणो को अपना जाति भ्राता कहता है।

(यह ऋभुगण सुधन्वा नामक अङ्गिरा के पुत्र हैं। अत कुत्स और ऋभुगण दोनो ही अङ्गिरा वश के होने से एक ही वश के हैं।)

इसी सूक्त के ८ वें। मन्त्र म सुधन्वा के पुत्र ऋभुगणो का मरी हुई गौ के चम स आच्छादित कर एक नई गाय बनाने उस मृत गाय के बछडे स मिलाने और वृद्ध माता पिता का फिर स युवा करने का उल्लख है। (इसी मण्डल

गय। इसके बाद जब देवा न उस सपत्ति का अग्नि म जबरदस्ती छीन लिया तब अग्नि रोने लग। इसी स अग्नि का एक नाम रुद्र हो गया।)

इसी सूक्त क ६ ठे मन्त्र म २१ यज्ञा का उल्लख है।

(सायण न उनके नाम इस प्रकार दिय हैं —विद्वत्य सम्बन्धा ७ पाक यज्ञ अग्न्याधेय दश—पौण मास आदि ७ हवियज्ञ अग्निष्टोम अति अग्निष्टाम आदि ७ साम यज्ञ।)

७६ वें सूक्त क पहल ३ मन्त्रा म विद्युद् रूप अग्नि का वणन है।

८ वें सूक्त क २ रे मन्त्र म श्यन द्वारा साम का लाना लिखा है।

(इसका उल्लख ३रे ४थ और ८वें मण्डलो म भा है। एतरय ब्राह्मण की एक कथा स गायत्री का श्यन रूप धारण करना प्रकट होता है।)

१६वें मन्त्र म अथवा मनु और अथर्वा के पुत्र दध्यङ के यज्ञो का उल्लख है।

८४ व सूक्त क १३ वें मन्त्र म प्रकट होता है कि इन्द्र न दधीचि ऋषि की हड्डिया म वृत्र आदि ६०×६=८१० असुरा को मारा था। इसी सूक्त क १५ वें मन्त्र म लिखा है कि इस चलत रहन वाल चन्द्र म अन्तर्हित जो सूय तेज ह वह सूय की ही एक किरण ह।

(इसी स प्रकट होता ह कि उस काल म भी आर्यों का यह बात ज्ञात थी।)

८५ व सूक्त क १ वें मन्त्र म मरुता द्वारा कुए का ऊँचा उठान का उल्लख ह।

(इसा प्रकार ११६ व सूक्त क ६वें मन्त्र म नासत्यद्वय (अश्विनी कुमारा) का गौतम ऋषि क पास मरुभूमि में कुआँ उठा लाने और गौतम का प्यास बुझान क लिए उस उलटकर उसका पाना बहान का उल्लख है।)

८६ वें सूक्त क ६ वें मन्त्र म मनुष्यो की १० वष का आयु होना लिखा है।

(सायणाचाय न इसस पहल क मन्त्र म कही आयु पर टीका करत हुए मनुष्यो की आयु ११६ या १२० वष मानी ह।)

इसी सूक्त क १ वें मन्त्र म जा पञ्चजना शब्द है सायण न उसक दो

अध किये है—एक गन्धर्व पितर देव, असुर और राक्षस। दूसरा ब्राह्मण क्षत्रिय वश्य शूद्र और निषाद।

(७ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र क पञ्चक्षिति और १०० वें सूक्त के १२ व मन्त्र क पाञ्चजन्य शब्द का भी यही तात्पर्य माना है।)

६३ वें सूक्त क ४ थ मन्त्र म वृसय का उल्लेख है।

(कुछ लोग इस ही इलियड का ब्रिसेस (Bri es) मानते है।)

१०१ वें सूक्त की १ ली ऋचा म इन्द्र का ऋजिश्वा राजा के साथ मिल कर कृष्ण नामक असुर की गर्भवती स्त्रियों को मारना लिखा है २ री ऋचा म इन्द्र की भुजा-हीन वृत्र या व्यंस नामक, पिप्रु और शुष्ण को मारने का उल्लेख है और ३ री ऋचा म इन्द्र का पणियो द्वारा चुराई गई अङ्गिरा आदि का गायो का पता लगाना और दस्युओ को वध करना प्रकट किया है।

१०३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र म इन्द्र का वृत्र (व्यंस) अहि और रौहिण नामक असुरो को मारना कहा है।

१०४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र म कुयव नामक असुर उसकी दो स्त्रिया और शिफा नाम की नदी का उल्लेख है।

१०५ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र म वृक का उल्लेख है।

(सायणाचार्य न इसकी कथा इस प्रकार लिखी है —त्रित ऋषि के कुए म गिरन क पूर्व उन्हें खाने के लिए एक भेड़िया नदी पार करते गया। परन्तु वह सूर्य का किरणो को देखकर अपने भोजन क समय का न होना समझ वापस लौट गया।)

१०८ वें सूक्त का ६ वा और १० वा मन्त्र करीब-करीब एक ही है। केवल पूर्वार्ध म दो शब्दों म भिन्नता है।

११० वें सूक्त के २ रे मन्त्र में मन्त्र-कर्ता अङ्गिरा का पुत्र कुत्स ऋभुगणो को अपने आति भ्राता कहता है।

(यह ऋभुगण सुधन्वा नामक अङ्गिरा के पुत्र है। अतः कुत्स और ऋभुगण दोनों ही अङ्गिरा वंश के होने से एक ही वंश के हैं।)

इसी सूक्त के ८ वें मन्त्र म सुधन्वा के पुत्र ऋभुगणो का मरी हुई गौ के चर्म से आच्छादित कर एक नई गाय बनाने उस मृत गाय के बछडे से मिलाने और वृद्ध माता पिता को फिर से युवा करने का उल्लेख है। (इसी मण्डल

के २० वें सूक्त के ४ थे मन्त्र म भी ऋभुगणा का अपने माता पिता को युवा करना लिखा है।)

(६४ वें सूक्त के पहल १४ मन्त्रो का चतुथ पाद एक ही ह। इसी प्रकार ६६ वें सूक्त म पहल ६ मन्त्रा का १०० वें सूक्त के पहल १५ मन्त्रो का १०१ वें सूक्त म पहल ७ मन्त्रों का १०५ वें सूक्त के पहल १८ मन्त्रा का चतुथ पाद अपने-अपन सूक्तानुसार समान ह तथा ६४ वें स ६६ वें और ६८ वें १०० वें स १०३ वें और १०५ वें तथा ११५ वें सूक्त के अन्तिम मन्त्रों का उत्तराध एक समान ही है।)

(६६ वा सूक्त १ मन्त्र का ही ह।)

१११ वें सूक्त क ५वें मन्त्र में समर-विजयी वाज का उल्लख ह।

११२ वें सूक्त में अश्विनी कुमारा का अनेक जना की सहायता करना लिखा है।

(इन सहायता पान वालो में—रेभ वन्दन कण्व अन्तक (सुभ्र-पुत्र) भुज्यु कर्कन्धु वय्य शुचति अत्रि पृश्निगु पुरुकुत्स परावृज ऋज्राश्व श्याण वर्तिका वसिष्ठ श्रुतय नय (सेल-पत्नी) सँगडी विश्पला (अश्व पुत्र) वश (दीघतमा की स्त्री) उशिज का पुत्र दीघश्रवा (उशिज-पुत्र) कक्षीवान् (कण्व-पुत्र) त्रिशोक मान्धाता भरद्वाज दिवोदास (पुरु कुत्स पुत्र) त्रसदस्यु (विरवन-पुत्र) वम्र कलि पृथि (वन) शयु मनु स्यूमरश्मि पठर्वा शर्यात घूर विमद (विजवन-पुत्र सुदास अधिगु ऋतस्तुभ कृशानु, (इन्द्र-पुत्र) कुत्स सुवीति दधीति ध्वसन्ति पुरुपन्ति थ।)

(इस सूक्त के पहले २३ मन्त्रा का चतुथ पाद एक ही है)

११६ वें सूक्त क १ ले मन्त्र म अश्विनों की कृपा स विमद का स्वयवर म स्त्री प्राप्त करना लिखा है।

२ रे मन्त्र म इनके रथ क वाहक गधम का उल्लख है।

३ रे मन्त्र म तुग्र राजा का बड़े कष्ट से अपन पुत्र भुज्यु को सना दकर नौका द्वारा समुद्र (स्थिरद्वीप) म रहन वाल शत्रु को जीतन क लिए भजना और उस (भुज्यु) के समुद्र म डूबने पर अश्विनीकुमारों का उसे नाव द्वारा तुग्र के पास पहुँचाना लिखा है।

८ वें मन्त्र म यन्त्र-गृह म फँसे अत्रि क उद्धार का उल्लख है। ६ वें मन्त्र म अश्विन्य का मरु-भूमि में कुआँ लाकर गौतम की प्यास बुझाना कहा है। १० वें म इनका च्यवन ऋषि के बुढ़ाप को दूर करना कहा है।

१२ वें मन्त्र म दधीचि का घोड का मस्तक पहन कर, अश्विद्वय का मधु विद्या सिखाना लिखा है।

(सायणाचाय न लिखा है कि इन्द्र ने अथर्वा के पुत्र दधीचि को मधु विद्या सिखला कर कह दिया था कि यदि किसी दूसरे को यह विद्या सिखाई तो तुम्हारा मस्तक काट लूँगा। अश्विनीकुमारो न मधु विद्या सीखने की इच्छा स दधीचि का सिर काट कर उसके स्थान पर घोडे का सिर लगा दिया और उस मुख के द्वारा मधु विद्या सीखली। इस पर जब इन्द्र ने पहले कहे अनुसार वह घोडे का मस्तक काट डाला तब अश्विनीकुमारो ने दधीचि का पहला मस्तक लाकर फिर से उसकी धड पर लगा दिया। अन्त म इन्द्र ने उसी घोड के सिर की हड्डी से वज्र बनवाकर वृत्रादि असुरों का मारा। पुराणों स इस कथा म कुछ भद प्रतीत होता है।)

१३ वें मन्त्र से प्रकट होता है कि अश्विनीकुमारो न ऋषि-कन्या वध्रिमती के स्तोत्र द्वारा पुकारन पर पुत्र की कामना करन वाली उस नपुंसक-पतिका को हिरण्यहस्त नामक पुत्र दिया था।

१५ वें म इनके खल नरेश की स्त्री विश्पला का पर कट जान पर उस लोहे को जाघ देने का उल्लेख है।

(इसी सूक्त की १६ वी ऋचा और सूक्त ११७ वें की १७ वी ऋचा के शब्दो म तो भिन्नता है परन्तु भावार्थ एक ही निकलता है कि—ऋजाश्व ऋषि न मादा भेडिये के खान के लिए जब १०० भेडो को मार डाला तब उसके पिता न नाराज होकर उस अधा कर दिया। परन्तु अश्विनीकुमारो न उस फिर स दृष्टि शक्ति दी।

१७ वें मन्त्र म अश्विनीकुमारो का घुड़दौड जीतकर सूर्य-कन्या सूर्या का प्राप्त करना लिखा है।

(कहा जाता है कि सूर्या राजा सोम को दी जान वाली थी। परन्तु उसे पाने की सारे ही देवो ने इच्छा की। इसस उसको प्राप्त करन के लिए घुड दौड जीतन की शर्त रक्खी गई।)

२२ वी ऋचा म अश्विनो का ऋषत्क के पुत्र शर और शान्तश्रयु की सहायता करना लिखा है।

(परन्तु कुछ विद्वान् इन अश्विद्वय को द्यावा पृथिवी कुछ दिवा रात्रि कुछ सूर्य चन्द्र और कुछ धार्मिक नरेश मानते हैं।)

११७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अश्विद्वय का कृष्ण के पुत्र विश्वकाय के स्तुति करने पर उसके पुत्र विष्णापु का लाना और कोढ़ के कारण वृद्धावस्था तक अविवाहित रहने वाली घोषा को नीरोग कर पति प्रदान करना कहा है। ८ वें मन्त्र में अश्विनीकुमारों का श्याव के कोढ़ को दूर कर सुन्दर स्त्री देना कवि के अन्धेपन को दूर करना और नपद-पुत्र का बहरापन मिटाना सूचित किया है।

इसके १९ वें मन्त्र में अश्विद्वय का भेड़िये के मुख से वर्तिका पक्षी का छुड़ाना जाहुष को लेकर पर्वत पर जाना और विश्वाड असुर के पुत्र का विषाक्त तीर से मारना लिखा है। २४ वें मन्त्र में इनका बध्रिमती को हिरण्य हस्त नामक पुत्र देना और तीन टुकड़ों में विभक्त श्याव ऋषि को जीवित करना बतलाया है।

११६ वें सूक्त में अश्विद्वय का भुज्यु को समुद्र से निकाल कर उसके पिता के पास पहुँचाना दिवोदास की रक्षा करना सूर्या को पत्नी रूप में पाना रेभ और अत्रि की रक्षा करना वन्दन को युवा और दीर्घायु करना वामदेव को गर्भ से निकालना दधीचि के मन को तृप्त करना और पेदु को घोड़ा देना लिखा है। इसी के ६ वें मन्त्र में उशिज-पुत्र कक्षीवान् का उन्हें सोमपान के लिये बुलाना प्रकट होता है।

१२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में कहा है कि हे अश्विद्वय! घोषा-पुत्र सुहस्ति और भृगु ने तुम्हारी जो स्तुति की थी वही स्तुति मैं पज्र-वंशी कक्षीवान् भी करता हूँ। ६ठे मन्त्र में अन्धे ऋज्राश्व का इनकी स्तुति करके नेत्र पाना वर्णित है।

१२१ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में इन्द्र का घोड़ी को गौ की माता करना अर्थात् घोड़ी से गाय पैदा करना लिखा है।

(द्वितीय अष्टक)

१२२ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में असुर शब्द रुद्र के लिए प्रयुक्त किया गया है।

(इस अष्टक में इस (असुर) शब्द का प्रयोग १० बार हुआ है।)

इसके ५ वें मन्त्र में उशिज-पुत्र कक्षीवान् द्वारा की गई अश्विद्वय की स्तुति है। इसी में घोषा का अपने श्वेत-कुष्ठ नाश के लिए अश्विनी कुमारों की स्तुति करना भी कहा है। ८ वाँ मन्त्र इस प्रकार है —

अस्य स्तुषे महिमघस्य राध सचा सनेम नहुष सुवीरा ।
जनो य पज्रेभ्यो वाजिनीवानश्वावतो रथिनो मह्य सूरि ॥८॥

अथ—मैं धनवाले देवों के धन की स्तुति करता हूँ। हम मनुष्य हैं इसलिए रण में शोभा पाने वाले पुत्र पौत्रादि से युक्त होकर इस धन का उपभोग करें। जो देव अङ्गिरा गोत्री कक्षीवान् को अन्न घोड़ और रथ देते हैं उन्हीं की मैं स्तुति करता हूँ।

इसी सूक्त के १३ वें मन्त्र में इष्टाश्व और इष्टरश्मि (राजाओं) का उल्लेख है।

(कुछ विद्वान इष्टाश्व को ही जन्द (पारसी) धर्म का प्रचारक गुष्टास्प मानते हैं।)

१४ वें मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा मशर्शार के चार पुत्रों और आयवस के तीन पुत्रों की शिकायत की गई है।

१२३ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में अहना (उषा) का उल्लेख है।

(कुछ लोग इसे ही ग्रीका की 'ऐथेना' देवी मानते हैं।)

८ वें मन्त्र में उषा का सूर्य से ३० योजन आगे रहना लिखा है।

(सायणाचार्य के मतानुसार सूर्योदय से करीब आधे दण्ड पहले उषा का उदय होता है।)

१२५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् का स्वनय द्वारा प्रस्तुत किये रत्न का ग्रहण करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है —कक्षीवान् अपना अध्ययन समाप्त कर घर लौटते हुए मार्ग में सो गया। इतने में स्वनय राजा उधर आ निकला और कक्षीवान् के रूप को देखकर उसे अपने घर ले आया तथा उसके साथ अपनी दस कन्याओं का विवाह कर दिया। इसके साथ ही दहेज में १०० निष्क सुवर्ण १०० घोड़े १०० बैल १०६० गायें और ११ रथ दिये। कक्षीवान् ने इन सबको लेकर अपने पिता दीर्घतमा को दे दिया।)

१२६ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में कक्षीवान् द्वारा भावयव्य के पुत्र स्वनय के लिए अनेक स्तोत्र बनाने का उल्लेख है। २ रे मन्त्र में कक्षीवान् का १०० निष्क १०० घोड़े और १०० बैल प्राप्त करना लिखा है। ३ रे में स्वनय का कक्षीवान् के लिए भूरे रंग के घोड़ों वाले दस रथ, जिन पर वधुएँ बैठी थी

और १०६० गायें भेजना और कक्षीवान् का उन्हें सबको अपने पिता को देना कहा है।

४ थे मन्त्र में हजार गायों के आगे दस रथों के ४० सुरंग घोड़ों का पंक्तिबद्ध होकर चलना और कक्षीवान् के नौकरों का उनके लिए घास का प्रबन्ध कर उनकी मालिश करना लिखा है।

(इससे प्रत्येक रथ में ४ घोड़ा के जोड़ने का रिवाज प्रकट होता है।)

६ ठे मन्त्र में स्वनय द्वारा एक रमणी (लामशा) का आलिङ्गन करना और उसका नकुली के समान चिरकाल तक रमण करना प्रकट किया है तथा उसका उस (स्वनय) को बहुत बार भोग प्रदान करना भी कहा है।

७ वें में उक्त रमणी द्वारा स्वनय का सम्भोग के लिए आह्वान है। वह रमणी अपना अधार की भेड़ की तरह रोम वाली और पूर्णवया होना भी प्रकट करती है।

१२७ वें सूक्त के ७ वें मन्त्र में अरणि मन्थन द्वारा अग्नि का उत्पन्न किया जाना दर्शाया है।

१२६ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में राक्षसों के विनाश के लिए इन्द्र का पैदा किया जाना कहा गया है।

१३ वें सूक्त की ७ वी ऋचा में इन्द्र का दिवोदास के लिए (शम्बर के) ६० नगरों का नाश करना और शम्बर का पर्वत से गिराना लिखा है। ८ वी में इन्द्र का (अंशुमती नदी के तट पर) कृष्ण नामक असुर की काली चमड़ी उधेड़ कर उसे मारना कहा है।

१३१ वें सूक्त की २ री ऋचा में स्त्री-पुरुषों का साथ-साथ यज्ञ कर स्वर्ग गमन की कामना करना बतलाया है।

१३३ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में रक्त वर्ण पिशाचों और राक्षसों का उल्लेख है।

१३४ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र में वायु का यजमान को उसी प्रकार जगाना कहा है जिस प्रकार निद्रित स्त्री का उसका जार जगा देता है।

१३८ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में पूषा देवता से प्रार्थना की गई है कि वह प्रार्थी को ऊँट की तरह युद्ध में पार लगावे।

(इससे उस समय ऊँट का भी युद्ध में प्रयोग होना प्रकट होता है।)

४ थे मन्त्र म बकरे को पूषा (सूय) का वाहन कहा है।

१३६ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र म दधीचि अङ्गिरा प्रियमेध कण्व अत्रि और मनु को दीघजीवी कहा है और अपने जीवन के साथ उनका सम्बध प्रकट कर उन्हें नमस्कार किया है। ११ वें मन्त्र मे ११ स्वग के ११ पृथ्वी के और ११ अन्तरिक्ष के इस प्रकार कुल ३३ देवो का उल्लेख है।

१४० वें सूक्त के ३ से ५ तक के मन्त्रा और ६ वें मन्त्र म २ काष्ठो से अग्नि का उत्पन्न होना प्रज्वलित होना स्फुलिङ्ग उडाना और मार्गों को जला कर काला करना वर्णित है।

१४७ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र म अग्नि का ममता के पुत्र दीर्घतमा का अन्धापन दूर करना प्रकट किया है।

(सायण ने लिखा है कि जिस समय दीघतमा गभ म था उस समय उसकी माता (उचथ्य की स्त्री) ममता से (उसके देवर) बृहस्पति ने सभोग किया था। परन्तु उस समय वर्णसकरता के भय से दीघतमा ने उन्हे ऐसा करने से मना किया। इससे क्रुद्ध होकर बृहस्पति ने उसे शाप द्वारा अधा कर दिया। इसके बाद दीघतमा ने अग्नि की स्तुति कर अपना अन्धापन दूर करवाया।)

१५३ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र म मित्रावरुण की कृपा स रातहव्य (राजा) की गायों का दुधारू होना लिखा है।

१५४ वें सूक्त के १ ल मन्त्र म विष्णु के वामनावतार के कार्यों का उल्लेख है।

१५५ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में ६४ कनाओं का उल्लेख है।

(वे ये हैं —सवत्सर १ अयन २ ऋतु ५ (इनमें हेमन्त और शिशिर एक में ही ग्रहण किये गये हैं।) मास १२ पक्ष २४ अहोरात्र ३० प्रहर ८ और राशियाँ[१] १२। कुछ विद्वान 'चतुर्भि साकं नवतिं' का अथ (६०×४) = ३६० कर के उनसे संवत्सर के दिनो का आशय लेते हैं।)

१५७ वें सूक्त के ६ठे मन्त्र में अश्विनी कुमारों का वद्य होना कहा है।

१५८ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र म तुग्र के पुत्र भुज्यु की समुद्र-यात्रा का उल्लेख है। ५ वें मन्त्र म दासों (अनार्यों) द्वारा वृद्ध दीघतमा को ओधा

---

१ राशियों का उल्लेख मानना सन्देहास्पद है।

मुँह पर फेंकना त्रित का उसका सिर काटना और दास का उसके हृदय और कंधों पर चोट पहुँचाना लिखा है।

(अश्विनी कुमारों ने दीर्घतमा को इन सब घातों से बचाया था।)

१६१ वें सूक्त के १ से मन्त्र में सुधन्वा के पुत्र ऋभुओं का अग्नि के विषय में विचार है।(कहते हैं कि सुधन्वा के ३ पुत्रों ने अपने कर्म से देवत्व प्राप्त कर लिया था। एक बार जिस समय वे सोम-पान कर रहे थे उस समय देवों ने अग्नि को वहाँ भेज दिया। अग्नि ने जब उनके समान रूप को देखा तब वह स्वयं भी वैसा ही रूप बनाकर सोम-पान करने लगा। इस प्रकार आये समान रूप वाले चौथे व्यक्ति को देखकर ऋभु लोग उसके विषय में विचार करने लगे।)

१६२ वें सूक्त में अश्वमेध का वर्णन है।

इसमें पहले बकरों को घोड़े के पास ले जाया जाता है। इसके बाद घोड़े को ३ बार अग्नि के पास ले जाते हैं तथा उसे वृक्ष काट कर बनाये यूप (खंभे) में रस्सी से बाँध देते हैं। ये बंधन गले पैरों और सिर पर लगाये जाते हैं। फिर उसे घास दी जाती है। बाद में उसका वध किया जाता है। वध के बाद उसके मांस पर मक्खियाँ भी बैठती हैं। तथा कुछ मांस छुरे में और मारने वाले के हाथों और नखों में लग जाता है। उस घोड़े का पेट भी चीर दिया जाता है और फिर उसके मांस को पकाया जाता है। आग में पकाते समय उसका कुछ अंश शूल (सीख) में लगा रह जाता है और मांस रस भी जमीन पर गिरने लगता है। मांस पकता और बँटकर उस मांस को पकना देखते हैं उसकी गंध की प्रशंसा करते हैं और उसका कुछ अंश माँगना चाहते हैं। फिर पक जाने के बाद उसको रस बर्तनों में उलट कर गर्म रखने के लिये ढक दिया जाता है। अश्व के अङ्गों को काटने समय पहले वन की टहनी से भिन्न-भिन्न स्थानों पर चिह्न कर उन्हें छुरी से पूर्व निश्चयानुसार काटते हैं। घोड़े के बगल में चौंतीस टेढ़ी हड्डियाँ (पसलियाँ) होती हैं। वे शस्त्र से काटी जाती हैं। अश्व का मारने वाला अश्व के अङ्गों को बिखरने से बचाने के लिए ध्यान करता हुआ देख देखकर एक-एक हिस्सा काटता है और उन हिस्सों के पिण्ड बना कर अग्नि में होम जाते हैं। इस कार्य के लिए प्रस्तुत किये गये घोड़े की न तो मृत्यु और न हिंसा ही मानी जाती है। इस अश्व के साथ ही पूर्वोक्त बकरा का भी पुरोडाश बनाया जाता है।

१६३ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में यम का उल्लेख है और १६४ वें सूक्त[1]

---

१ इस सूक्त के सारे मन्त्र अथर्व में भी मिलते हैं।

में दूसरे मन्त्र म एक ही घोडे का सात नामा स सूय के रथ को मीचना लिखा है।

(यह समवत सूय की श्वेत रश्मि म सात रगा का होना प्रकट करता है।) ४ से ६ तक की ऋचाओ म ससार की उत्पत्ति के विषय में जिज्ञासा की गई है तथा आत्मा और परमात्मा पर विगप रूप से प्रश्न है। तथा इन वाता का दवा को भी पता न होना माना है। ११ वी ऋचा में १२ मासा ३६० दिना और ३६० राता का उल्लख है। १२ वी ऋचा में ४ ऋतुओ (हेमन्त और शिशिर को एक में मिलाकर) १२ महीनो तथा दक्षिणायन और उत्तरायण का वणन है। २० वी में आलङ्कारिक भाषा में जीवात्मा और परमात्मा के विषय में सकेत हैं। ३० वी ऋचा में जीवात्मा को अमर कहा है। ४४ वी ऋचा में अग्नि का पृथ्वी के और कम को करना कहा है। ४५ वी में ब्राह्मणा को परा पश्यन्ती मध्यमा और वखरी ४ प्रकार की वाक का ज्ञान होना लिखा है।

१६५ वें सूक्त में इन्द्र और मरद्गणा का सवाद है। इसमें प्रत्यक न एक दूसरे का और अपना महत्व वतलाया है।

१६८ वे सूक्त के ९ वें मन्त्र में पृश्नि द्वारा—मरद्गणा का जन्म होना और १०वें में मरद्गणा के लिए मान्दाय का इस (सूक्तात्त) स्तोत्र को बनाना लिखा है।

१७० वें सूक्त में इन्द्र और अगस्त्य का सवाद है। इसमें पहले एक दूसर पर आक्षप है और वाद में इन्द्र की स्तुति है।

१७३ वें सूक्त क १ ले मन्त्र म उद्गाता द्वारा सामगान का उल्लेख है। और २ रे मन्त्र में स्त्री-पुरुषो (मनुष्यो) का यज्ञ करना लिखा है।

१७४ वें सूक्त के १ ले मन्त्र म इन्द्र के लिए असुर शब्द का प्रयोग किया गया है २ रे मन्त्र में इन्द्र का सुदृढ सात पुरा (नगरो) का नष्ट करना और पुरकुत्स के लिए वृत्रासुर का वध करना लिखा है। ७ वें मन्त्र में इन्द्र का दासा को मारना और स्योंणि राजा के लिए कुयवाच का वध करना प्रकट किया है।

१७५ वें सूक्त के ३ रे मन्त्र म उसका कता अपने को मनुष्य वतलाकर इन्द्र की प्रार्थना करता है।

१७६ वें सूक्त क ३ रे मन्त्र म पञ्च क्षिति शब्द आया है जिसका अथ ब्राह्मण क्षत्रिय वश्य शूद्र और निषाद किया गया है।

मुह भर फकना त्रित का उसका सिर काटना और दास का उसके हृदय और कधों पर चाट पहुँचाना लिखा है।

(अश्विनी कुमारो ने दीघतमा को इन सब घातों से बचाया था।)

१६१ वें सूक्त के १ से मन्त्र मे सुधन्वा के पुत्र ऋभुओ का अग्नि के विषय म विचार है।(कहते हैं कि सुधन्वा के ३ पुत्रो न अपन कम स देवत्व प्राप्त कर लिया था। एक बार जिस समय वे सोम-पान कर रहे थ उस समय दवो न अग्नि को वहाँ भेज दिया। अग्नि ने जब उनके समान रूप का देखा तब वह स्वयं भी वैसा ही रूप बनाकर सोम-पान करन लगा। इस प्रकार आये समान रूप वाल चौथे व्यक्ति को दखकर ऋभु लोग उसके विषय म विचार करन लग।)

१६२ वें सूक्त म अश्वमेध का वणन है।

इसमें पहल बकरा को घोड़ के पास ले जाया जाता है। इसके बाद घोडे को ३ बार अग्नि के पास ले जाते हैं तथा उसे वृक्ष काट कर बनाय यूप (खभे) म रस्सी स बाध दते हैं। बन्धन गल परो और सिर पर लगाये जाते है। फिर उस घास दी जाती है। बाद म उसका बध किया जाता है। वध के बाद उसके मास पर मक्खिया आ बैठती हैं। तथा कुछ मास छुरे म और मारने वाले के हाथो और नखो म लग जाता है। उस घोड़े का पेट भी चीर दिया जाता है और फिर उसके मांस को पकाया जाता है। आग म पकाते समय उसका कुछ अश धूल (कीच) म लगा रह जाता है और मांस रस भी जमीन पर गिरने लगता है। लोग चारा ओर बठकर उस मांस का पकना देखत है उसकी गध की प्रशसा करते हैं और उसका कुछ अश माँगना चाहते हैं। फिर पक जान के बाद उसको रस वतनो म उलट कर गम रहन के लिय ढक दिया जाता है। अश्व के अङ्गो को काटते समय पहल बत की टहनी स भिन्न भिन्न स्थानो पर बाध कर उन्ह छुरी स पूव निश्चयानुसार काटते हैं। घोड़े के बगल म चौंतीस टेढ़ी हड्डियाँ (पसलियाँ) होती हैं। व छुरा से काटी जाती हैं। अश्व का मारने वाला अश्व के अङ्गो को बिखरन स बचान क लिए शब्द करता हुआ दख दखकर एक-एक हिस्सा काटता है और उन हिस्सो क पिण्ड बना कर अग्नि म होम करत हैं। इस कार्य के लिए प्रस्तुत किय गय घोड का न तो मृत्यु और न हिंसा ही मानी जाती है। इस अश्व के साथ ही पूर्वोक्त बकरा का भी पुरोडाश बनाया जाता है।

१६३ वें सूक्त क २ र मन्त्र म यम का उल्लेख है और १६४ वें सूक्त[1]

[1] इस सूक्त क चार मन्त्र अथर्ववेद में भी मिलत हैं।

११ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में इन्द्र से सोमपान कर लानी पूंछ में लग सोम को भाडने की प्रार्थना की गई है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का त्रित की मित्रता के लिए त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का वध करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र का ४० वर्ष तक खोज कर पर्वत में छिपा शम्बरासुर का पता लगाना और सोए हुए अहि नामक दैत्य को मारना लिखा है।

१३ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में इन्द्र के पास १००० घोड़े होना और उसका दभीति ऋषि के लिए दस्युओं को मारना लिखा है।

१४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का ९९ हाथ वाले उरण को मारना और अर्बुद को औंधे मुंह पटक कर नष्ट करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अश्न, शुष्ण, पिप्रु, नमुचि और रुधिक्रा को मारना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शम्बर के नगरों को ध्वस्त करना और वर्ची के १०० ००० पुत्रों को मारना लिखा है। ७ वें में इन्द्र का कुत्स, आयु और अतिथिग्व के शत्रुओं को मारना लिखा है।

१५ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का दभीति ऋषि की रक्षा करना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शिशु का उत्तर वाहिनी बनाना कहा है। ७ वें में इन्द्र का परावृज का लंगड़ापन और अन्धापन दूर कर उसका उसके विवाहार्थ आई हुई कन्याओं के पीछे दौड़ने में समर्थ करना दिखाया है। ९ वें में इन्द्र का सोमपान कर चुमुरि और धुनि नामक असुरों को मारना और दभीति की रक्षा करना कहा है।

१७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का धूमने वाले पर्वतों को अचल करना और ७ वें मन्त्र में आजीवन अविवाहिता कन्या का माता पिता से धन की कामना करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र से केवल अपने को धन देने और औरों को न देने की प्रार्थना की गई है।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का अपने सारथि कुत्स के लिए शुष्ण, अशुष और कुयव का वध करना तथा दिवोदास के लिए शम्बर के ९९ नगरों का नाश करना कहा है। ८ वें में गृत्समदों का इन्द्र की स्तुति करना और ९ वें में अन्य लोगों का दक्षिणा न देकर अपने को देने की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं को उनकी चुराई गई गायों के प्राप्त करने का मार्ग बताना और अग्नि के प्रधान नगरों

१७६ वें सूक्त के १ से ४ तक के मन्त्रों में लोपामुद्रा और अगस्त्य का काम वासना-पूर्ण संवाद है।

१८२ वें सूक्त के ५ वें और ६ ठे मन्त्रों में अश्विनी कुमारों का डूबते हुए तुग्र-पुत्र को नौका द्वारा बचाने का उल्लेख है।

१८ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में गौतम पुरमाढ और अत्रि का हव्य ग्रहणार्थ अश्विद्वय को बुलाना लिखा है।

१८५ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में द्यावा-पृथिवी में पहले कौन उत्पन्न हुआ है और ये किस निमित्त उत्पन्न हुए हैं यह जिज्ञासा की गई है। तथा ८ वें में देवों बन्धुओं और जामाता के प्रति किये अपराध की क्षमा प्रार्थना है।

१८७ वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में जल पीने और यव खाने से शरीर के स्थूल होने की कामना की गई है।

१९१ वें सूक्त में विषधरों और उनके स्वभाव का वर्णन कर सूर्य द्वारा उनका नाश होना प्रकट किया है।

(यहाँ पर प्रथम मण्डल समाप्त होता है।)

दूसरे मण्डल के १ ले मन्त्र में अग्नि के जल पत्थर वन और औषधि से उत्पन्न होने की कामना की गई है। २ रे मन्त्र में अग्नि को ही सब प्रकार का ऋत्विक कहा है। (७ ऋत्विजों के नाम पहले दिये जा चुके हैं। परन्तु बड़े यज्ञों में १६ ऋत्विक तक होते थे—जैसे ऋग्वेद के १ होता २ मैत्रावरुण ३ अच्छावाक ४ ग्रावस्तुत्। यजुर्वेद के १ प्रतिप्रस्थिता २ नेष्टा उन्नेता ४ अध्वर्यु। सामवेद के १ उद्गाता २ प्रस्तोता ३ सुब्रह्मण्य ४ प्रतिहर्ता। अथर्ववेद के १ ब्रह्मा २ ब्राह्मणाच्छंसी ३ पोता ४ आग्नीध्र।

(इनके अतिरिक्त अथर्ववेद में १ सभ्य २ दीक्षितापत्नी ३ शमिता ४ गृहपति ५ अङ्गिरा ६ धर्मा और ७ धर्माध्वर्यु को भी ऋत्विक माना है।)

२ रे सूक्त के १० वें मन्त्र में पञ्च कृष्टि शब्द से पूर्वोक्त पाँच वर्णों का उल्लेख है।

३ रे सूक्त के ६ ठे मन्त्र में दो स्त्रियों का मिलकर कपड़ा बुनना बताया है।

७ वें सूक्त के १ ले मन्त्र में आये अग्नि के विशेषण भारत शब्द का अर्थ भरण कर्ता किया गया है।

११ वें सूक्त के १० वें मन्त्र में इन्द्र से सोम-पान कर दाढ़ी मूँछ में लगे सोम को झाड़ने की प्रार्थना की गई है। १९ वें मन्त्र में इन्द्र का त्रित की मित्रता के लिए, त्वष्टा के पुत्र विश्वरूप का वध करना लिखा है।

१२ वें सूक्त के ११ वें मन्त्र में इन्द्र का ४० मास तक खोज कर पर्वत में छिपे शम्बरासुर का पता लगाना और सोते हुए अहि नामक दैत्य को मारना लिखा है।

१३ वें सूक्त के ६ वें मन्त्र में इन्द्र के पास १००० घोड़े होना और उसका दभीति ऋषि के लिए दस्युओं को मारना लिखा है।

१४ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का ९९ हाथ वाले उरण को मारना और अर्बुद को औंधे मुँह पटक कर नष्ट करना लिखा है। ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अश्व शुष्ण पिप्रु नमुचि और रुधिक्रा को मारना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का शम्बर के नगरों को ध्वस्त करना और वर्ची के १०००० पुत्रों का मारना लिखा है। ७ वें में इन्द्र का कुत्स आयु और अतिथिग्व के शत्रुओं का मारना लिखा है।

१५ वें सूक्त के ४ थे मन्त्र में इन्द्र का दभीति ऋषि की रक्षा करना लिखा है। ६ ठे में इन्द्र का सिन्धु को उत्तर वाहिनी बनाना कहा है। ७ वें में इन्द्र का परावृज का लंगड़ापन और अन्धापन दूर कर उसका उसके विवाहार्थ आई हुई कन्याओं के पीछे दौड़ने में समर्थ करना दिखाया है। ९ वें में इन्द्र का सोम-पान कर चुमुरि और धुनि नामक असुरों का मारना और दभीति की रक्षा करना कहा है।

१७ वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का पूर्वत मार पर्वतों का अचल करना और ७ वें मन्त्र में आजीवन अविवाहिता कन्या का माता पिता से धन की कामना करना प्रकट किया है। ९ वें मन्त्र में इन्द्र से मंगल अपने को धन देने और औरों का न देने की प्रार्थना की गई है।

१९ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में इन्द्र का अपने सारथि कुत्स के लिए शुष्ण असुर और कुयव को वश करना तथा दिवोदास के लिए शम्बर के ९९ नगरों को नष्ट करना कहा है। ८ वें में गृत्समदों का इन्द्र की स्तुति करना और ९ वें में अन्य लोगों को दक्षिणा न देकर अपने को देने की प्रार्थना है।

२० वें सूक्त के ५ वें मन्त्र में इन्द्र का अङ्गिराओं को उनकी चुराई गई गायों के प्राप्त करने का मार्ग बताना और दस्यु के प्रधान नगरों

का नष्ट करना लिखा है। ७ वें मन्त्र म कृष्ण-वर्ण दास-सेना का उल्लेख है।

२२ वें सूक्त के ४ थ मन्त्र म दव दास वृत्रासुर के लिए प्रयुक्त है।

२३ वें सूक्त म ३ र से १७ वें मन्त्र[1] तक बृहस्पति स दास नाश की प्रार्थना की गई है।

२७ वें सूक्त म १ से मन्त्र म १ मित्र २ अयमा ३ भग ४ वरुण ५ दक्ष और ६ अंश—इन ६ आदित्यो (सूर्यों) के नाम दिये हैं। १० वें मन्त्र म असुर' शब्द वरुण का विशेषण है और उसके लिए कहा गया है कि तुम दव हो या मनुष्य हो पर सबके राजा हो। इसी म उससे १०० वष तक देखने देकर पूर्वजों की भाँति आयु का भोग करन दन की प्रार्थना की गई है।

२८ वें सूक्त म ९ वें मन्त्र म वरुण स अपन को पूवजों के और अपन ऋण स मुक्त करन की प्रार्थना की है। इसी म ऋण-कर्ता के लिए आलोक का अभाव होना प्रकट किया है। १ वें मन्त्र म अपन का भीरु बताकर वरुण से बन्धुओ द्वारा कही जान वाली स्वप्न की भयङ्कर बाता म और चोरो तथा भेड़ियों आदि से बचाव की प्रार्थना की गई है।

२९ वें सूक्त के १ म मन्त्र में आदित्यो से गुप्तप्रसविणी स्त्री के गर्भ की तरह अपन पापो को दूर देश में फेंकने की प्रार्थना है।

(२८ वें और २९ वें सूक्तो का अन्तिम ऋचायें एक ही हैं।)

० वें सूक्त के ८ वें मन्त्र में इन्द्र के शाण्डिका के प्रधान (असुर-पुरोहित शण्डामर्क) को मारन का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में शत्रुओं को मारकर उनका धन अपने को देन का प्रार्थना है।

३२ वें सूक्त क ४ थ मन्त्र में सुई स बुनाई करन का सङ्केत है।

३४ वें सूक्त के २ रे मन्त्र में रुद्र द्वारा पृश्नी के गर्भ म मरुतो की उत्पत्ति लिखी है। ३ रे मन्त्र में मरुतो के सुवर्ण के शिरस्त्राण का उल्लेख है। १० वें मन्त्र में मरुतो द्वारा पृश्नी के अधो भाग का दोहन करना कहा है। १३ वें मन्त्र म मरुद्गण की क्षोणी नामक वीणा का उल्लेख है।

३५ वें सूक्त के ६ ठे मन्त्र में समुद्र स घोड़े (उच्चैःश्रवा) की उत्पत्ति कही है।

३८ वें सूक्त के ४ थ मन्त्र म स्त्रियो का वस्त्र बुनना प्रकट किया है।

---

१ १५ वें मन्त्र में भी—ऐसा—है।